विशारद द्वितीय
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक 400, न्यूनतम 180
शास्त्र 150, न्यूनतम 52
क्रियात्मक : 250 (क्रिया 200 + मंच प्रदर्शन 50) न्यूनतम 128

शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

अंक 75, न्यूनतम 26

१. प्राचीन नृत्यसम्बन्धी घटनाओं की जानकारी ।
२. मध्य युगीन ग्रंथों की जानकारी ।
३. नव रसों का पूर्ण ज्ञान ।
४. नायिका भेद का विस्तृत ज्ञान ।
   अ. धर्म भेद से नायिका, स्वकीया, परकीया, सामान्या ।
   आ. आयु विचार से नायिका, मुग्धा, मध्या, प्रौढा ।
   इ. प्रकृतिअनुसार नायिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा ।
   ई. जाति भेद से नायिका, पद्मिनी, चित्रणी, शंखिनी और हस्तिनी ।
   उ. परिस्थिति अनुसार अष्ट नायिकाओंमें से, कलहान्तरिता, वासकसज्जा, विरहोत्कंठिता, स्वाधीनपतिका ।
५. ओडिसी, कुचिपुड़ी, तथा मोहिनी अट्टम नृत्य की व्याख्या तथा वाद्यों व वस्त्रों की जानकारी ।
६. लय और ताल का उद्गम तथा कथ्थक नृत्य में महत्त्व ।
७. नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त और असंयुक्त मुद्राओं का तौलनिक अभ्यास ।
८. छोटी सवारी (15) शिखर (17) में आमद, तिहाई, तोड़ा, परन आदि को लिपिबध्द करना ।
९. रामायण, महाभारत, भागवत पुराण तथा गीतगोविंद की संक्षेप में जानकारी ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

अंक: 75, न्यूनतम :26

१. निम्नलिखित पात्रों की मुद्राएँ (अभिनय दर्पणानुसार) ब्रम्हा, विष्णु, सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण, वायु तथा दशावतार सम्बन्धी (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण, कल्कि)
२. पौराणिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ ।
३. जीवनियाँ गुरु सुंदरप्रसाद, गुरु मोहनराव कल्याणपूरकर, महाराज कृष्णकुमार, पं. बिरजू महाराज
४. नृत्य में लोकधर्मी तथा नाट्यधर्मी की परिभाषा तथा प्रयोग ।
५. विदेशों में भारतीय नृत्यकला की लोकप्रियता ।
६. आधुनिक काल के नृत्य में विकसित होनेवाले नये तकनीक तथा उनका स्वरुप (ध्वनि संयोजन, प्रकाश सज्जा, नेपथ्य, सायक्लोरामा, स्लाईडस् आदि)
७. कथ्थक नृत्य में कवित्त तथा ठुमरी का स्थान ।
८. गायन, वादन, चित्रकला, मूर्तिकला तथा साहित्य का नृत्य से सम्बन्ध ।
९. मत्त ताल (18) रास ताल (13) में आमद तोड़ा, परन, चक्करदार तोडा, फरमाईशी परन, परमेलु, आदि।

क्रियात्मक :

१. विष्णुवंदना (राग, ताल तथा शब्दों की जानकारी)
२. छोटी सवारी (15), शिखर (17), मत्त ताल (18), रासताल (13) में विशेष तैय्यारी ।
३. तीनताल, झपताल, रूपक, सादे ठेके पर नाचना ।
४. छोटी छोटी कथाओं पर नृत्य निर्मिति करना। -
५. तत्कार में बाँट, लड़ी, चलन का विस्तार आदि का प्रदर्शन।
६. गतभाव में दक्षता, कांचन मृग (सीताहरण तक) कंसवध। (कथा कहकर अभिनय अनिवार्य)
७. बैठकर ठुमरी या पद की पंक्ति पर अनेकों प्रकार से संचारी भाव का विस्तार करना।
८. सभी तालों की रचनाओं को ताल देकर पढ़ना।
९. त्रिवट, तराना, चतुरंग, अष्टपदी, स्तुति आदि में से किन्ही दो का प्रदर्शन (राग, ताल, शब्द परिचय)
१०. नवरसों को बैठ कर केवल चेहरे द्वारा व्यक्त करने की क्षमता।
११. दशावतारों सम्बन्धी किसी रचना पर प्रदर्शन (रचनाकार, राग, ताल आदि का ज्ञान)
१२. तीनताल में लय के साथ धुकुटी, ग्रीवा आदि का संचालन।
१३. तीनताल का नगमा (लहरा) बजाने या गाने की क्षमता।
१४. परीक्षक द्वारा दिये गये प्रसंग को तुरन्त प्रस्तुत करना।
१५. अष्ट नायिकाओं पर भाव प्रस्तुति ।

- **मंचप्रदर्शन**: स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (20 से 30 मिनट तक)

विशारद पूर्ण (द्वितीय वर्ष) :- कुल मौखिक २५०
समय :- क्रियात्मक ६० मिनिट + मंचप्रदर्शन २० से ३० मिनिट प्रति छात्र

छोटी सवारी / शिखर / मत्तताल/रासताल विशेषताओं सहित		तीनताल, झपताल, रूपक सादे ठेके पर नाचना		वंदना
२०		२०		१०
ततकार में बाँट / लडी / चलन	पढन्त तय्यारी के साथ	गतभाव	गतनिकास	
१०	१०	२०	२०	
बैठकर ठुमरी पदमर भाव	चतुरंग/अष्टपदी स्तुति	नवरस चेहरे द्वारा	नायिका पर भाव प्रस्तुति	**कुलअंक**
२०	२०	१०	१०	**२५०**
दशावतार	लय के साथ भृकुटी / ग्रीवा संचालन	उपज	नगमा	
१०	५	१०	१०	

मंच प्रदर्शन :- ५०

ताल/लय	अभिनय	वेशनुषा	रंगमंच प्रस्तुति पद्धत
१५	१५	१०	१०